7. पूर्वानुसंधान (References)

(1) गुरुदत्त रचित(1995),''श्रीमद् भगवद् गीता एक अध्ययन'', पृष्ठ संख्या 1 से 240 :

(2) गुप्त ओमप्रकाश रचित(2001),''गीता की प्रासंगिकता'',साहित्य प्रकाशक, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 1 से 400 :

(3) भट्ट वसन्तकुमार म(.2004),''श्रीमद् भगवद्गीतामां निरुपित कर्मबन्धनमांथी मुक्ति अने कर्मबन्धनना अभाव नी मुक्ति'' स्वयं प्रकाशित, पृष्ठ संख्या 1 से 91 :

(4) सलीमखान(2009),'जिहाद का आदेश भगवत गीता में भी है ।', 'स्वच्छ सन्देश' पत्रिका, पृष्ठ संख्या.01 :

(5) डो.जोशी प्रज्ञा एच.,(2001),''महाभारत की गौण गीताओं – एक विवेचनात्मक अध्ययन'' महर्षि वेदविज्ञान अकादमी, अमदावाद, पृष्ठ संख्या 1 से 34 :

(6) भावे विनोबा(2010),''उपनिषदोनो अभ्यास'' यज्ञ प्रकाशन समिति, वडोदरा, पृष्ठ संख्या 1 से 80 :

(7) डो.राधाकृष्णन(1990),''उपनिषदों का संदेश'', राजपाल एन्ड सन्स, दि़ल्ली, पृष्ठ संख्या 1 से 160 :

(8) भावे विनोबा(2003),''भारतीय संस्कृति'' यज्ञ प्रकाशन समिति, वडोदरा, पृष्ठ संख्या 1 से 64 :

(9) भावे विनोबा(2011),''आजना युगनी धर्मभावना'' यज्ञ प्रकाशन समिति, वडोदरा, पृष्ठ सं. 1 से 62 :

(10) भावे विनोब(ा2009),''गीताई चिन्तनिका'' यज्ञ प्रकाशन समिति, वडोदरा, पृष्ठ संख्या 1 से 496 :

(11) भावे विनोबा2(003,2010),''ईशावास्य वृति'' यज्ञ प्रकाशन समिति, वडोदरा, पृष्ठ संख्या 1 से 92 :

(12) भावे विनोबा(1997,2002),'' ध्यान अने प्रार्थना'' यज्ञ प्रकाशन समिति, वडोदरा, पृष्ठ संख्या 1 से 40 :

(13) पटेल गौतम, संपादक पटेल नीलम2(004),''श्रीमद भगवद्गीता, शांकरभाष्य सहित'', संस्कृत सेवा समिति, अमदावाद, पृष्ठ संख्या 1 से 303 :

(14) D.Satya Sarada Kandula(2008), The Bhagavad Gita(Complete), Satyask. Googlepage.com/thebhagavadgita, Page1-18 :

(15) ShriSwami Chidananda(1992), The Gita Vison, The Divine Life Society, Shivanandanagar(U.P.) Pag 1 - 14 :

(16) ड़ो.पंडया शान्तिकुमार, डो.प्रजापति अम्बालाल, डो.जोशी जगदीश2(003),''श्रीमद् भगवद्गीता'', पार्श्व प्रकाशन, अमदावाद, पृष्ठ संख्या 1 से 340 :

(17) डो.ठाकोर अजित2(003),''गीतांजलि''(प्रकीर्ण लेखसंग्रह), पार्श्व प्रकाशन, अमदावाद, पृष्ठ सं. 1 से 105 :

(18) डो.हर्षदेव माधव(2007),''मनोविज्ञान अने भगवद्गीतानुं आद्यात्मिक मनोविज्ञान'' पार्श्व प्रकाशन, अमदावाद, पृष्ठ संख्या से 24 :

(19) डो.जोशी प्रज्ञा जे(.2011),'महाभारत में गीता की परम्परा''(महाभारत का संस्कृत साहित्य ऊपर

प्रभाव’, राष्ट्रीय परिसंवाद में प्रस्तुत संशोधन लेखो का संपुट)श्री टी.ए. चतवाणी आर्ट्स एण्ड जे.वी. गोकळ ट्रस्ट कोमर्स कोलेज - राधनपुर, पृष्ठ सं. 36 से 46 :

(20) प्रा.डो.प्रजापति समीरकुमार के.(2011),’पुराणो अन्तर्गत गीताओ पर श्रीमद् भगवद्गीतानो प्रभावः एक अध्ययन‘(‘महाभारत का संस्कृत साहित्य ऊपर प्रभाव’, राष्ट्रीय परिसंवाद में प्रस्तुत संशोधन लेखो का संपुट) श्री टी.ए. चतवाणी आर्ट्स एण्ड जे. वी.गोकळ ट्रस्ट कोमर्स कोलेज-राधनपुर, पृष्ठ सं. 51 से 64 :

(21) प्रा. दवे किशोरभाई एस.(1993),’’गीतातत्वविचार’’,युनिवर्सिटी ग्रन्थ निर्माण बोर्ड,अमदावाद, पृष्ठ संख्या 51 से 64 :

(22) विप्लव जयराम(2009),’कर्मो कारण है पुनर्जन्म : श्रीमद् भगवद्गीता‘, प्रवक्ता.कोम,(Online Hindinews & views portle of India), पृष्ठ संख्या.01 :

(23) डो.जोशी जगदीश(2010),’’गीतानो कर्म–ज्ञान–भक्तिबोध’’, डिवाइन पब्लिकेशन, अमदावाद–1 पृष्ठ संख्या 1 से 156 :

(24) थानकी ज्योति(2010),’कर्मनो मार्ग‘,ReadGujarati.com, पृष्ठ संख्या 1 से 4 :

(25) सल्ला मनसुख(2010),’शांतिमय क्रान्तिनुं पाठ्यपुस्तक : गीता‘, अखंडआनंद, अमदावाद, पृष्ठ संख्या 1 से 4 :

(26) शास्त्री मो.हनिफखान(2004),’गीता और कुरानः मंजिल एक‘, SPEAKINGTREEN. IN, पृष्ठ सं. 1

(27) डो.करणसिंह(1993,1998,2001,2009),’’हिन्दुदर्शन एक समकालीन दृष्टि’’, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली–110032, पृष्ठ संख्या 63 से 72:

(28) प्रो. सिन्हा हरेन्द्रप्रसाद(1993),’गीता का दर्शन‘– प्रकरण : 6(भारतीयदर्शनकीरुपरेखा), मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पृष्ठ संख्या 63 से 72:

(29) अवस्थी मयंक (2011),’निष्काम कर्मयोग की प्रासंगिकता – गीता‘(साहित्यम्–नागपुर), पृष्ठ संख्या 1 :

(30) द्विवेदी हजारीप्रसाद(1994; 1998), ’तिलक का गीता दर्शन‘(आलोक पर्व – राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली – 110032),पृष्ठ संख्या 144 से 147 :

(31) स्वामी विवेकानंद, अनुवादक : शर्मा रामविलास1(995, 2007),’’कर्मयोग’’(वाणी प्रकाशन –नयी दिल्ली110002), पृष्ठ संख्या 1 से 83 :

(32) डो.हर्षदेव माधव, भगवद्गीतामाँ सार्थक संबोधनो(1999),संस्कृत साहित्य अकादमी, गांधीनगर , पृष्ठसंख्या. 10 से 18 :

(33) डो.शाहगोविन्द श. श्रीमद् भगवद्गीतामाँ ज्ञान, कर्म–भक्तिनो समन्वय (लेखमन्जूषा),(1998),

संस्कृत साहित्य अकादमी, गांधीनगर, पृष्ठ संख्या पृष्ठ संख्या 18 से 27 :

(34) व्यास मधुसूदन एम., गीता – जीवन का प्रबोधक ग्रन्थ ('वितानम' संस्कृत लेखो का संग्रह), (2005), पार्श्व प्रकाशन, अमदावाद, पृष्ठ संख्या 61 से 66 :

(35) स्वामी रामसुखदास, गीता – दर्पण(1993 –1999, 2001), गोविन्द भवन – कार्यालय, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ संख्या 408 :

(36) रानी डो. सुजाता(2002), श्री सोमनाथ ढल संजय प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002, पृष्ठ संख्या 467 :

(37) प्रसाद इन्द्र मोहन(2000), श्रीमद् भगवद् गीता में भक्तियोग दर्शन, बी. के. तनेजा क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, करमपुरा, नई दिल्ली – 110015, पृष्ठ संख्या 220 :

8. प्रकरण विभाजन : प्रस्तुत महा शोध प्रबंध का प्रकरण उपक्रम इस तरह रहेगा –

(1) महाभारत, श्रीमद् भगवद्गीता एवं आचार्य विनोबा भावे का परिचय ।

(2) श्रीमद् भगवद्गीता में तत्वचिन्तन(ज्ञानयोग) – विनोबा भावे की दृष्टि से ।

(3) श्रीमद् भगवद्गीता में निरुपित कर्मयोग का चिंन्तन और विनोबा भावे की दृष्टि ।

(4) श्रीमद् भगवद्गीता में निरुपित भक्तियोग का चिंन्तन और विनोबा भावे की दृष्टि ।

(5) विनोबा भावे शाश्वत सिद्धान्त और उनका प्रयोग ।

(6) श्रीमद् भगवद्गीता का कलापक्ष।